ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 22-23
ISSN NO.-2347-2944
Vol-12, Issues-XII YEAR 2018 Extra

दक्षिण भारतीय चित्रकला शैली का उद्भव और विकास

गुलाबधर
सहायक आचार्य, चित्रकला विभाग, ज0रा0वि0वि0, चित्रकूट (उ0प्र0) भारत

Received- 30.04.2018, Revised- 06.05.2018, Accepted - 10.05.2018 E-mail: gulabdharjrhu@gmail.com

सारांश : *भारतीय चित्रकला के इतिहास में 10वीं शताब्दी से लेकर 14वीं शताब्दी तक दक्षिण शैली का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गुफा–चित्रों की निर्माण–परम्परा का अन्त हो जाने के बाद से मुगल चित्रकला के जन्म तक चित्रकला के इतिहास को जोड़ने वाली कड़ियों में दक्षिण शैली का उल्लेखनीय स्थान है। भारतीय चित्रकला के इन पाँच सौ वर्षों का इतिहास आज अज्ञातवस्था में ही रहता यदि उसको दक्षिण शैली का योग न मिला होता। 10वीं से लेकर 14वीं शताब्दी तक के समय की भारतीय चित्रकला दक्षिण में सुरक्षित रही। यद्यपि पालि और संस्कृत के ग्रन्थों के विवरणों से हमें यह विदित होता है। ईसा की कई शताब्दी पहले से उत्तर भारत में चित्रकला का अच्छा प्रचलन हो चुका था और उसका विकसित रूप दक्षिण में पहुँचा किन्तु उत्तर भारत की चित्रकला समय की यातनाओं के कारण सर्वथा नष्ट हो गयी जबकि दक्षिण में बची रह गयी। दक्षिण की इसी अवशिष्ट चित्रथाती के आधार पर हम और दिशाओं की भारतीय कला समृद्धि का अन्दाजा लगा सकते हैं जो अस्त हो चुकी है जिसका अंश दक्षिण में सुरक्षित अनेक प्रकार की शैलियों का प्रमाण है।1*

कुंजी शब्द – दक्षिण शैली, निर्माण, परम्परा, मुगल चित्रकला, गुप्त चित्र, अज्ञातवास, अवशिष्ट, चित्रथाती।

भारतीय चित्रकला की उपलब्धि का प्रमाणिक इतिहास गुफा–चित्रों के निर्माण से प्रारम्भ होता है। भारतीय चित्रकला की प्राचीन परम्परा का प्रतिनिधित्व भित्तिचित्रों में मिलता है। ये भित्तिचित्र अधिकांश में बौद्धकला से और जैन कला से अनुबद्ध है। भित्तिचित्रों के निर्माण के पूर्व बौद्धकला और जैन कला का समृद्ध रूप मूर्तियों तथा मंदिरों के शिल्प में व्याप्त हो चुका था। भित्तिचित्रों के निर्माण के बाद उसका पूरा रूप निखर आया। जोगीमारा, अंजन्ता, बाध, बादामी, सिन्तनवासला और एलोरा इनके मुख्य केन्द्र हैं। ये गुफा चित्र अपनी सुन्दरता और समृद्धि के स्वम उदाहरण है। इनका निर्माण लगभग 300 ईसा पूर्व से लेकर लगभग 1000 ई0 के बीच हुआ। फिर भी इसके प्रचार–प्रसार और प्रेरणा की सीमायें निर्माण के बहुत पहले ही इस देश में चित्रकला की उन्नत परम्परा का सूत्रपात हो चुका था।2 उसी श्रृंखला की अंतिम घड़ी इन गुफाओं में सुरक्षित रहकर हम तक पहुँच सकी है।3

इन गुफा चित्रों में अनेक प्रकार की शैलियों का समावेश है। इन अनेक प्रकार की शैलियों में एक शैली दक्षिण भारतीय शैली है। भारतीय चित्रकला की जिस प्राचीन कलात्मक विरासत को जिन अनेक शैलियों ने गौरव के साथ आगे बढ़ाया जिनके अस्तित्व का आज पता तक नहीं चलता था जिनके बन्धन में बहुत ही कम सूचनायें उपलब्ध होती है। उनमें दक्षिण शैली का भी एक स्थान है। भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में दक्षिणात्मक पद्धतियों की एक सर्वथा अपने ढंग की मौलिक निश्पत्तियों विशेष महत्व है। इन दक्षिण कला पद्धतियों ने यद्यपि स्वतंत्र रूप से, वहाँ की तत्कालीन संस्कृति–संस्कारों के अनुरूप अपना विकास किया, तथापि उसका उत्तर कालीन स्वरूप मध्ययुगीन मुगल और राजपूत शैलियों के सामंजस्य का परिणाम ही सिद्ध हुआ। दक्षिण में तीन प्रमुख शैलियाँ देखने को मिलती है जिनके नाम है– द्रविण, बेसर, नागर, पहली शैली का जन्म दक्षिण में हुआ और वहीं के क्षेत्र में रहकर उसका विकास हुआ। नागर शैली जो आर्यावत शैली के नाम से जानी जाती है। उत्तर भारत से निर्मित होकर दक्षिण में आयी। दक्षिण में नागर की अपेक्षा द्रविण की प्रमुखता रही है। शिल्पकला के क्षेत्र से इन द्रविण शैली के कलाकारों ने बहुत ही उत्कृष्ट कृतियों का निर्माण किया जिनकी तुलना आर्य शैली के देवी–देवताओं की भव्य आकृतियाँ भी नहीं कर पाती।3 पल्लव एवं चोल राजवंशों के युग में निर्मित प्रस्तर तथा कास्य–मूर्तियों में द्रविड़ शैली की अतुलनीय विशेषताओं को देखा जा सकता है।

उत्तर भारत में 12वीं शताब्दी के बाद मूर्तिकला का प्रायः ह्रास हो चुका था। दक्षिण से तब भी कास्य मूर्तियाँ अपने उत्कर्ष पर थी। दक्षिण में कास्य मूर्तियों में सबसे प्रसिद्ध नटराज की मूर्ति है। इसके अतिरिक्त वहाँ के राजाओं तथा वैष्णव साधु–संतों की मूर्तियों का कौशल भी दर्शनीय है। श्ि2ाल्पकला के अतिरिक्त चित्रकला के क्षेत्र में भी यही बात दिखायी देती है। द्रविड़ लोग वस्तुकार और मूर्तिकार ही नहीं थे, चित्रकला में भी प्रवीण थे।

दक्षिण भारतीय की चित्रकला के परिचायक आदि रूप यद्यपि आज उपलब्ध नहीं है फिर भी उनके सम्बन्ध के रूप में जो विवरण साक्ष्य उल्लेख मिलते है उनके आधार

अनुरूपी लेखक

पर यह प्रतीत होता है कि साहित्य–निर्माण की भाँति चित्रकला की दिशा में भी दक्षिण की अपनी अनेक विशेषता थी। दक्षिण में कुछ मुस्लिम शासकों ने चित्रकला को प्रोत्साहन दिया जिसके परिणामस्वरूप वहाँ हिंदिया कला शाखा का उदय हुआ। यह शाखा पूर्णतया फारसी शैली से थी।4 दक्षिण के कुछ मंदिरों में प्राचीन शैली के नमूने स्पष्ट हालत में देखने को मिलते हैं। बृहदीश्वर मंदिर तंजोर के भित्तिचित्र और जिनकी थी। तिरूपतिपुरम के वर्धमान मंदिर की चित्रकारी का संकेत आगे है। इन कला का व्यापक रूप से अजंता की शैली का प्रभाव है।

इन कला कृतियों के अध्ययन करने से पता चलता है कि दक्षिणात्य चित्र शैली की बाहरी साज–सज्जा तो इस्लामी प्रभावों से अभिभूत है। किन्तु उसका भीतरी भाव विधान सर्वथा भारतीय है। जिस पर अजंता का रूप स्पष्ट रूप से लक्षित होता है। 16वीं सदी की दो हस्तलिखित चित्रित पोथियाँ प्राप्त है। पहली पोथी तो अली आदिलशाह के राज्यकाल से निर्मित हुई जो संप्रति पूना में है इन दोनों पुस्तकों के चित्रों तथा लिपियों में इस्लाम और भारत (अजंता) के संस्कारों का सम्मिश्रण है। अजन्ता के बाद की चौथी–पाँचवी शताब्दी ई0 की चित्रकारी में भी कम आकर्षण नहीं है। मूर्तिकला की भाँति चित्रकला के क्षेत्र में भी कार्य होता रहा। बाघ गुफा, सिन्तलवासल के जैन मंदिरों और केरल के पद्यनापुरम के तथा कृष्णपुरम के चित्रों का निर्माण होता रहा। 19वीं शताब्दी के भित्तिचित्रों से हमें दक्षिण की चित्रकला के निरन्तर विकास का पता चलता है। गुफा चित्रों के निर्माण में दक्षिण भारत का महत्वपूर्ण योग रहा है।4 गुफाचित्रों के अतिरिक्त भारत की प्राचीन चित्रकारी का केन्द्र दक्षिण रहा है।5

ऐतिहासिक दृष्टि से दक्षिण की चित्रकला को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं विजय नगर के राजाओं के तथा बहमनी सुल्तानों के समय दक्षिण की चित्रकला उद्‌भव युग कहा जा सकता है।6 उसका दूसरा युग बहमनी साम्राज्य के पतन के बाद बीजापुर, गोलकुण्डा और अहमदनगर की सल्तनतों से आरम्भ होती है। विजयनगर में राजाओं के ही समकालीन दक्षिण में बहमनी सुल्तानों का भी अधिपत्य था जिनकी सल्तनत की सीमाओं को 14वीं से 16वीं शताब्दी के बीच रखा जा सकता है। अहमद शाह अली, बहमनी के द्वारा 1432 ई0 में निर्मित बीहर दुर्ग के रंग महल के तीन कमरों में किसी समय सुन्दर पुष्पों के चित्र थे किन्तु अब वे नष्ट हो चुके हैं। इन्हीं शाहवली का मकबरा इरानी शैली की सुन्दर नक्काशी से चित्रित है।7 जिसका सुन्दर वर्ण–विधान आज भी सुरक्षित है। यद्यपि बहमनी सुल्तान कला में पारखी तथा कला प्रेमी थे। किन्तु कला का दक्षिण में हास्य ही हुआ इसका कारण था कि उनमें इस्लाम की कट्‌रता व धर्म द्रोह की भावना अधिक थी। बहमनी साम्राज्य के पतन के बाद दक्षिण में एक साथ पाँच सल्तनतें कायम हुई इन पाँच सल्तननों में बीजापुर, गोलकुण्डा और अहमदनगर की सल्तनतें ने ही दक्षिण में चित्रकला की परम्परा को आगे बढ़ाया। दक्षिण में उक्त पाँच शाखाओं के स्थापित होने के पूर्व भारतीय चित्रकला की क्या स्थिति थी। इसका परिचय प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है।8 कि तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का अध्ययन किया जाय। तत्कालीन चित्रकला की जानकारी के लिए हमें मुगल साम्राज्य की स्थिति को जानना होगा। मुगल शाहंशाह अकबर, जहाँगीर और शाहंशाह की संरक्षता में इस्लामी चित्रकला अपनी उन्नति के शिखर पर आरूढ़ थी। अकबर ने उसको बड़ा प्रोत्साहन दिया था। तैमूर वंशीय होने पर भी हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू कला के लिए उसके हृदय में बड़ा प्रेम था। वह चाहता तो मुगल कला को ही चमका सकता था किन्तु उसकी हार्दिक अभिलाषा थी कि इस्लामी, इरानी और भारतीय कला में समन्वय स्थापित किया जाये।9 जिससे धर्म द्रोह की भावना उत्पन्न न हो जिससे सभी कलाओं को अच्छी उन्नति सौहार्द बना रहे।

गोलकुण्डा, बीजापुर का आदिलशाही वंश कला का बड़ा प्रेमी था। आदिलशाही सल्तनत के प्रतिष्ठित सुल्तान युसुफ आदिलशाह बड़ा कला प्रेमी था। अकबर की भाँति वह भी उदारनीति का शासक था। उसने इरान तथा तुर्की से प्रख्यात साहित्य और कलाकारों को आमंत्रित कर दक्षिण में चित्रकला तथा साहित्य के विकास के लिए सराहनीय कार्य किया। उसका पुत्र इस्माइल अली आदिलशाह तथा उसकी पत्नी चाँद सुल्तान कला के पारखी और कलाकारों के आश्रयदाता थे। 'नुजूम अल–उलूम' नामक पुस्तक इन्हीं आदिलशाह के शासनकाल में 1570 ई0 में चित्रित हुई थी। इस पुस्तक की चित्रावली में एक ओर तो दक्षिण की भव्य चित्रशैली के दर्शन होते हैं और दूसरी ओर प्राचीन फारसी। भारतीय चित्रकला के इतिहास के लिए वह मानदण्ड का कार्य करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 परमेश्वरी लाल गुप्त, भारतीय वस्तुकला, पृ0–40, 42
2. डॉ0 मारूती नन्दन तिवारी, मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला, पृ0–44, 45
3. डॉ0 सुरेन्द्र वर्मा, कला संस्कृति और मूल्य, पृ0–45
4. अशोक, जापान की चित्रकला, पृ0–111, 112
5. अशोक, जापान की चित्रकला, पृ0–88, 89
6. परमेश्वरी लाल गुप्त, भारतीय वस्तुकला,

*****